 ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

''देशभक्त पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' –एक क्रांतिकारी देशभक्त''

डॉ0 ऊषा देवी,

प्रवक्ता– इतिहास,
विद्यांत हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

शोध सार

1857 का स्वतंत्रता संग्राम ने एक राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीयता की भावना एंव राष्ट्रीय स्वाभिमान के नए युग का सूत्रपात किया। विदेशी सत्ता को आत्मसम्मान के लिए घातक समझते हुए प्रत्येक सजग भारतीय के मन में इसके प्रति धृणा व ग्लानि थी। पराधीनता को सबसे बडा अभिशाप घोषित किया गया–पराधीन सपनेहुँ सुख नांहि''। देश की स्वाधीनता के लिए संगठित मुक्ति संघर्ष प्रारंभ हो गया। इस मुक्ति संघर्ष में कवियों, लेखकों, पत्रकारों के साथ–साथ हमारे वीर स्वतंत्रता प्रेमी क्रांतिकारियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

इन क्रांतिकारियों ने भारत भूमि को 'भारत माता' कहकर उसके सपूतों को अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने के लिए प्रेरित किया। बंकिम चंद्र चटर्जी के ''आनंदमठ'' के संयासी विद्रोह से उठा 'वंदेमातरम' का जय घोष पूरे देश में स्वतंत्रता सेनानियों का प्रेरणा मंत्र बन गया। तिलक जी ने 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्व अधिकार है' का नारा दिया और स्वतंत्रता के लिए उत्साही सेनानी जान हथेली पर लिए त्याग व बलिदान के अस्त्र– शस्त्र उठाये मैदान में आ डटे।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजु–ए–कातिल में है।।

कवि और शायर रामप्रसाद बिस्मिल की ये पंक्तियां बताती है कि उनके दिल में अंग्रेजो के प्रति कितनी आग थी और अपने देश के प्रति कितना प्रेम था जिसने उन्हें एक महान देश भक्त क्रांतिकारी बना दिया। रामप्रसाद बिसिमिल ने गेंदालाल दीक्षित के मार्गदर्शन में देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और मातृदेवी नामक संगठन बनाया। वे निरन्तर स्वदेशी और स्वाधीनता व स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नरत रहे। प्रस्तुत शोध पत्र में रामप्रसाद बिसिमिल की क्रांतिकारी गतिविधियों का विवरण दिया गया है।

कूट शब्द : *स्वतंत्रता, क्रांतिकारी आंदोलन, स्वतंत्रता बन्देमातरम्, मातृभूमि, मातृवेदी, मजिस्ट्रेट ,मुकदमा , बलिदान, त्याग, हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन कवि साहित्यकार ।*

20वीं शताब्दी के महान क्रांतिकारी पं0 रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म जेष्ठ सुदी निर्जला एकादशी संवत 1954 (11 जून 1897 ई0) को शाहजहाँपुर के खिरनी बाग मोहल्लें में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। [1] इनके पिता का नाम मुरलीधर तथा माता का नाम मूलमती था। यह अपनी माँ की दूसरी संतान थे। उनके दादाजी रेजगारी तथा पिताजी स्टाम्प बेचने का व्यवसाय करते थे।[2] 7 वर्ष की आयु में रामप्रसाद को मक्तब में पढने भेजा गया किन्तु वहां साथी मुस्लिम विधार्थियों की कुसंगति से बुरी आदतों के शिकार हो गये जिसके परिणाम स्वरूप वह दो बार फेल हो गये। जुलाई 1911 ई0

में पिता ने उनका दाखिला मिशन स्कूल में अंग्रेजी की 5वीं कक्षा में करा दिया। यहां सुशील चंद्र सेन नामक एक बंगाली नवयुवक की सतसंगति से उनकी बुरी आदते छूट गई । वह अब मंदिर में जाकर पूजा–पाठ में समय व्यतीत करने लगे। यहां पर उनकी भेंट मुन्शी इद्रजीत से हुई, वे उन्हें आर्य समाज ले गए और 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने को दी । राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि –'सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन नें मेरे जीवन के इतिहास में नवीन पृष्ठ खोल दिए'।[3] बिस्मिल ने स्वामी दयानंद को अपना आदर्श मानते हुए अंखड ब्रमचर्य का व्रत ले लिया।

सन् 1913 ई0 में 16 वर्ष की आयु में रामप्रसाद ने आर्य समाज के विद्वान स्वामी सोमदेव के ओजस्वी व्याख्यान को सुना उन्होंने उसे स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद तथा महात्माँ कबीर के साहित्य के साथ कुछ क्रातिकारी पुस्तकें पढ़ने को दीं। राम प्रसाद 'उर्दू' में 'बिस्मिल' के नाम से शायरी करते थे। सोमदेव रामप्रसाद की शायरी से प्रभावित हुए, उन्होंने उसे राष्ट्र भक्ति से ओत–प्रोत शायरी लिखने को प्रेरित किया। सोमदेव ने रामप्रसाद की रचनाएं अमेरिका से प्रकाशित होने वाली 'गदर' पत्रिका में छपवाईं तो उनका उत्साह और अधिक बढ़ गया। एक कवि, शायर , साहित्यकार के रूप में उन्होंने ने कई पुस्तकें कविताएं और रचनाएं लिखी जैसे मैनपुरी षडयंत्र, स्वदेशी रंग, चीनी षडयंत्र(चीन की राज्य क्रांति), अरविन्द घोष की कारावास कहानी, अशफाक की याद में, अमेरिका कैसे स्वाधीन हुआ, जनरल जॉर्ज वाशिंगटन और सोना खान के अमर शहीद–वीर नारायण सिंह आदि है।[4]

स्वामी सोमदेव के प्रयासों के परिणाम स्वरूप ही संयुक्त प्रांत के क्रातिकारी गेंदालाल दीक्षित , राम प्रसाद 'बिस्मिल' ठाकुर गंगा सिंह आर्य समाजी थे और आर्य समाज भी उन दिनों राष्ट्रीय आंदोलन का प्रेरणास्रोत हुआ करता था इसलिए यदि देशभक्तों की निगाहें उस समय मार्गदर्शन के लिए आर्य समाज की ओर उठती थी तो सरकार की क्रूर दृष्टि भी उनकी गतिविधियों पर क्यूं न गढ़ी रहती।[5] ''

राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने शहर के युवा साथियों को संगठित कर 'आर्य कुमार सभा' की स्थापना की। उनके व्याख्यान , कविताओं शेरो–शायरी सुनकर सभा में युवाओं की संख्या बढ़ने लगी उन्होंनें 'सेवा समिति' जैसी अन्य संस्थाओं से जुड़कर कई जिलों में ख्याति प्राप्ति की। 1915 ई0 में भाई परमानंद की फांसी से दुःखी होकर उन्होंने 'मेरा जन्म' कविता लिखी जिससे प्रभावित होकर गेंदालाल दीक्षित ने राम प्रसाद को अपने दल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।[6]

गेंदालाल दीक्षित उन दिनों 'शिवाजी समिति' नामक एक संस्था चलाते थे जिसका उद्देश्य शिवाजी के तरीकों से भारत माता को विदेशियों के चंगुल से छुड़ाना था ।[7] राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने गेंदालाल के संरक्षण में एक नई संस्था 'मातृवेदी' गठित की जिसकी प्रतिज्ञा उन्होंने कविता मे लिखी। इस संस्था में नव किशोरों को शामिल कर लिया गया जो क्रांति कार्य हेतु धन संग्रह के लिए गेंदालाल दीक्षित के सहयोग से डकैतियां डालते थे।[8] 1916 ई0 में गठित 'मातृवेदी' एक गुप्त संगठन था। राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने 28 जनवरी 1918 ई0 में मातृवेदी का इस्तहार हिन्दी में प्रकाशित किया। जिसका मूल सार था – देशवासियों के नाम संदेश। अंग्रेजो को मारो और देश आजाद करो। वंदेमातरम। देशभक्तों देश की रक्षा हेतु शिवाजी तथा प्रताप के समान अपनी तलवारों को म्यान से निकालो.....अंग्रेजों के सिर काट दो और बता दो कि यह उनके अन्याय का परिणाम है।[9] राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने इसी तरह कविता में लिखी 'मैरपुरी की प्रतिज्ञा' (स्वदेशी शपथ) को भी छपवाया इसमें भी इस्तहार का भाव था, इन

इस्तहारों को लगाने का कार्य शाहजहाँपुर के राजाराम बाजपेयी तथा मुकुंदीलाल को सौंपा। पुलिस छापे के समय इनके घर से इश्तिहार व 'मैनपुरी की प्रतिज्ञा' की 242 छपी हुई प्रतियां मिली थी। (10)

'मैनपुरी षड्यन्त्र केस' में पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने गेंदालाल दीक्षित का सशस्त्र. सहयोग किया जिसमें दीक्षित जी गिरफ्तार कर लिए गए किन्तु बिस्मिल फरार हो गए और आगरा में भूमिगत जीवन में उन्होने कई पुस्तकें लिखी और कुछ का अनुवाद किया जिन्हें उन्होंने ने अपने खर्चे पर छपवाया और स्वयं घूम–घूम कर उन्हें बेचना पड़ा। इससे प्राप्त धन से उन्होंने अस्त्र–शस्त्र खरीद कर संगठन को मजबूत किया। (11) 1920 ई0 में जब 'मैनपुरी षडयंत्र केस' के बंदियों को छोड़ दिया और बिस्मिल के विरूद्व वारेन्ट समाप्त हो गया तब वे सार्वजनिक जीवन में लौटे अन्यथः घरवाले उन्हें मृत मानकर उनकी 10वीं तेरवी भी कर चुके थे (12) क्रांतिकारियों की इस काल की मनः स्थिति के बारे में शचीन्द्रनाथ संयाल ने लिखा है कि जिस प्रकार बाढ़ के कारण गृहस्थ विस्थापित हो जाता है और कही ठहरने का आश्रय ढूढा करता है उसी प्रकार मुक्ति पाकर विपलववादी राजबंदीगण कही टिकने व ठहरने का स्थान ढूढ़ रहे थे । (13)

जुलाई 1923 ई0 योगेशचंद्र चटर्जी अनुशीलन समिति की ओर से कानपुर आये और वहाँ अपने संगठन को प्रांत के अन्य जिलों में फैलाने के लिए बिस्मिल को अपने दल में शामिल किया वे लिखते है– बिस्मिल ने हमारे दल में प्रवेश किया और जीवन के अंतिम दिनों तक वे दल के वफादार सिपाही बने रहे। (14) यह संगठन था 'हिन्दुस्तान प्रजातांत्रिक संघ' जिसका गठन 1923 में किया गया। इस संगठन में शचीन्द्रनाथ बख्सी, राजेन्द्र लहड़ी , रवीन्द्र मोहनकार, सुरेश बाबू, अशफाक उल्ला खाँ, योगेश चन्द्र चटर्जी, ठाकुर रोशन सिंह, चन्द्रशेखर आजाद , दामोदर स्वरूप सेठ, भूपेन्द्र संन्याल, राम कृष्ण खत्री, मुकुन्दी लाल जैसे वीर क्रांतिकारी शामिल थे। (15) इस संघ की 23 अक्टूबर 1924 को योगोश चंद्र चटर्जी की अध्यक्षता में प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक कानपुर में पीली कोठी धर्मशाला में संपंन हुई जिसमें क्रतिकारी गतिविधियों को सक्रिय करने, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से प्रचार करने, सरकारी दमन हेतु काननू आदि पर परामर्श किया गया एवं एसोशिऐशन की कार्यवाही गुप्त रखने का निर्णय किया गया। (16)

राम प्रसाद 'बिस्मिल' विभिन्न जिलों में क्लब व समितियां स्थापित कर साप्ताहिक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित कर देशवासियों के मध्य वैचारिक क्राति हेतु निजी प्रेस (छापाखाना) खोलना चाहते थे ताकि प्रचार कार्य में बाधा न पड़े परन्तु इस समय समिति के सदस्यों की बड़ी दुर्दशा थी, चने मिलना भी कठिन था, सब पर कुछ न कुछ कर्ज हो गया था किसी के पास साबुत कपड़े तक न थे। कुछ विद्यार्थी धर्म क्षेत्रों तक में भोजन कर आते थे..... मैं किंकर्तव्यविमूढ था कोमल ह्रदय नवयुवक मेरे चारो ओर बैठकर कहा करते पं0 जी अब क्या करें? मैं उनके सूखे मुख देखकर रो पड़ता .....अंत में धैर्य धारण कर दृढ़तापूर्वक कार्य करने का निश्चिय किया । (17)

क्रांतिकारी देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे किन्तु संघर्ष के लिए उनके पास साधनो का अभाव था वे विवश्तावश डकैती डालते थे। गेंदालाला दीक्षित के नेतृत्व में बिस्मिल को (मैनपुरी षडयंत्र केस) डकैतियों का अनुभव प्राप्त था उन्होने संडाखेडा (तिलहर थाना निगोही) जून 1918 परेली (शाहबाद हरदोई) 23 जून 1918 बिचपुरी (पीलीभीत) 9 मार्च 1925 द्वारकापुर (प्रतापगढ) 24 मई 1925 आदि डकैतियों में भाग लिया ,किन्तु इन डकैतियों से बिस्मिल के मन पर

भारी बोझ था और उन्होनें अनुभव किया कि जनता के बीच क्रातिकारियों के छवि स्वतंत्रता प्रेमी देश भक्त के स्थान पर लुटेरों की बन रही है। अतः वे धन प्राप्ति के दूसरों साधनों पर गंभीरता से सोचने लगे ताकि जनता के बीच क्रातिकारी कार्यों पर कोई उंगली न उठा सके। (18) अंत में सरकारी खजाना लूटने का निश्चिय किया गया ।

वैचारिक क्रांति एव ंदल के कार्यसंचालन हेतु छापाखाना लगाने के लिए कम से कम 10,000 रूपए की आवश्यकता थी इसी समय जर्मनी से आने वाले माउजर पिस्तौल जिन्हें नगद रूप में कलकत्ता से प्राप्त करना था और संघ ऐसा मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहता था पर रूपयों की बहुत कमी थी ।(19) ऐसे में 'बिस्मिल' ने रेल डकैती के विचार को दल के समक्ष रखा और कुछ वाद–विवाद के उपरान्त प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया । इस कार्य हेतु दस सदस्यों को चयन किया गया वे थे– राम प्रसाद 'बिस्मिल' , चन्द्रशेखर, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, मुकुन्दीलाल, अशफाक उल्ला खाँ, मन्मथनाथ गुप्ता, बनवारी लाल, शचीन्द्र नाथ बख्शी, मुरारी लाल और कुन्दनलाल। (20)

पूर्वयोजनानुसार 9 अगस्त 1925 की संध्या दस क्रांतिकारी नौजवान लखनऊ सहारनपुर आठ डाउन यात्री गाड़ी में शाहजहाँपरु स्टेशन से सवार हुए, आज उन्हें अपने लक्ष्य की ओर जाना था, वे सिर पर कफन बांध शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती देने निकल पड़े, गिनती में वे सिर्फ दस थे पर उनके इरादे ऊँचे थे। वे देश की आजादी के लिए क्रांति के इस रास्ते पर सीना तान कर चलते थे, इसलिए आज उन्हें अपने इस अभियान पर नाज था। (21) हम लोगों के साथ चार नये माउजर पिस्तौल थे। इसके अतिरिक्त अन्य छोटे हथियार थे, हर पिस्तौल के साथ 50 से अधिक कारतूस थे। इससे स्पष्ट था कि हम लोग पूरी लड़ाई की आशा और तैयारी करके गये थे। (22) योजनानुसार जंजीर खीचकर निश्चित स्थान पर गाड़ी रोककर सरकारी खजाना 10 मिनट में लूटकर अपना कार्य समापत कर दिया। यह घटना काकोरी स्टेशन के समीप घटित हुई जिसके कारण इसे काकोरी (रेल डकैती) काण्ड नाम से जाना जाता है। राम प्रसाद 'बिस्मिल' अपनी इस सफलता पर लिखते है – कि साधारणतः इस बात पर बहुत से मनुष्य विश्वास करने में भी संकोच करेंगे कि मात्र दस युवकों ने गाड़ी खड़ी करके लूट ली..... धन से, जितना खर्च था, उसको निपटा दिया, अस्त्र–शस्त्र खरीद के लिए 1000 रूपये कलकत्ता भेज दिये, कार्यकर्ताओं को यथा स्थान भेजकर दूसरे प्रान्तों में कार्य बिस्तार करने का प्रबन्ध किया गया। (23)

इस घटना के विषय में ''दि इण्यिन टेलीग्रफ''(लखनऊ) दि ट्रिब्यून (लाहौर) ने चौकाने वाले समाचार प्रकाशित किये। लखनऊ के चीफ कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश सर लुईस शर्ट ने अपने फैसले में इस डकैती को भारत की अनोखी डकैती बताया। यह घटना पुलिस व सरकार के लिए चुनौती थी। हार्टन की अध्यक्षता में एक विशेष पुलिस इकाई गठित की गयी सरकार के सौभाग्य से ट्रेन डकैती के नोट शाहजहाँपुर में पकड़े गये। पुलिस को यह भी पता चला कि 'बिस्मिल' 8,9,10 अगस्त 1925 को शाहजहाँपुर में नहीं थे। अब ब्रिटिश सरकार पूर्णतः आश्वस्त थी कि इस काण्ड में क्रांतिकारियों का हाथ है जिसका नेता राम प्रसाद 'बिस्मिल' है। अभियुक्त को पकड़वाने वाले के लिए 5000 रूपये ईनाम की घोषणा की गयी। (24)

26 सितम्बर 1925 तक पुलिस ने 30 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। गोविन्द चरण व मन्मथनाथ गुप्त को बनारस से तथा 'बिस्मिल' को उनके निवास स्थान से गिरफ्तार किया गया। अशफाक उल्लाँ खां को 8 सितम्बर 1926 को गिरफ्तार किया गया। 40 से अधिक गिरफ्तारियों के कारण जनता में सरकार विरोधी भावना फैल

गयी किन्तु चन्द्रशेखर आजाद को आजीवन गिरफ्तार नही किया जा सका। गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा सम्पादित कानपुर के पत्र 'प्रताप' ने ''देश के नवरत्न गिरफ्तार'' शीर्षक में एक विस्तृत रिपोर्ट छापी।

काकोरी काण्ड के अभियुक्तों पर मुकदमा लखनऊ में स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनद्दीन की अदालत में 4 जनवरी 1926 को प्रारम्भ हुआ। सरकार की ओर से क्रातिकारियों के लिए हरकनाथ मिश्र वकील नियुक्त हुए जबकि सरकारी वकील जगत नारायण मुल्ला थे। सरकारी लेखों के अनुसार– काकोरी केस किंग बनाम राम प्रसाद 'बिस्मिल' व अन्य के नाम से जाना जाता है। क्रांतिकारियों पर कई आरोप लगाये गये, जेल में नृशुंस व्यवहार किया गया, क्रांतिकारियों ने जेल प्रशासन व सरकार के अत्याचारों ,अव्यवस्था के विरूद्व अनशन भी किया।

न्यायाधीश हेमिल्टन जो भारतवासियों से घृणा करने तथा न्याय का गला घोटने के लिए प्रसिद्व थे, अभियुक्तों ने अनेक मिन्नते व प्रार्थनाये की कि उनका मुकदमा हेमिल्टन साहब की अदालत से मुक्तकिल किया जाये, पर कौन सुनता है?..... राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने 26 जून 1926 को इसी आशय से गुप्त दरख्वास्त दी पर मामला इन्ही हुजुर की अदालत में चलता रहा। (25) कचहरी में क्रांतिकारी बड़े जोश उत्साह और बन्देमातरम् के नारों के साथ प्रवेश करते थे।..... पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' के पीछे सब आत्मायें बन्दे मातरम् गाती हुई चलती थीं भारत माता की जय, बन्देमातर् भारत प्रजातंत्र की जय से कचहरी का वायुमंडल पवित्र हो जाता था। अधिकारियों के हृदय इस नाद को सुनकर दहल जाते थे। (26) 6 अप्रैल 1927 ई0 को सेशन जज हेमिल्टन ने अपना निर्णय सुनाया, सम्पूर्ण निर्णय 115 पृष्ठों में था, क्रांतिकारियों को इण्डियन पेनल कोड की धारा 121 (अ) 120 (ब) तथा 396 के अंतर्गत सजायें दी गयी। राम प्रसाद बिस्मिल को प्रथम दो धाराओं के अनुसार आजन्म कालापानी तथा बिचपुरी और काकोरी ट्रेन डकैती के आरोप में धारा 396 के अंतर्गत फाँसी की सजा दी गयी । सभी क्रांतिकारियों ने इस निर्णय पर वन्देमातरम् का नाद किया और वायुमंडल में निम्म शब्द गूंज गये–

दरो दीवार पर हसरत से नजर करते है।

खुश रहो, अहलेवतन हम सफर करते है।।

इस निर्णय के विरूद्व 18 जुलाई 1927 को अवध चीफ कोर्ट में अपील की गयी और 2 अगस्त 1927 को फैसला सुनाया गया किन्तु फाँसी की सजाये पूर्ववत बनी रही लेकिन जिन्हें पूर्व में कम सजा दी गयी, उनकी सजाये बढ़ा दी गयी। क्रांतिकारी कल्पना भी नही कर सकते थे कि अपील में सजाये कम करने के बजाय बढ़ा दी जायेगी। दुर्भाग्य से ब्रिटिश भारत के न्यायाधीश पुलिस आदि सरकार के हाथ में कठपुतली के समान थे। (27) इसके बाद डिफेन्स वकील मोहन लाल सक्सेना की सलाह पर अभियुक्तों ने सरकार को माफीनामे की अर्जी भेजी, किन्तु सुनवाई नहीं हुई, बिस्मिल के पिता मुरलीधर ने 250 आनरेरी मजिस्ट्रेट से लिखवाकर अपील भिजवाई, पं0 मदन मोहन मालवीय ने 78 चुने जन प्रतिनिधियों के हस्ताक्षरयुक्त सामूहिक प्रार्थना पत्र गवर्नर व वायसराय को भेजें, अन्त में प्रिवी कौंसिल लन्दन में अपीज भेजी गयी किन्तु वहां भी फैसला वही हुआ– फाँसी। (28)

इन अपीलों व प्रार्थनाओं का असर इतना हुआ कि फांसी की तारीख दो बाद आगे बढ़ा दी गयी। पहले यह 16 सितम्बर 1927 थी बाद मे। 11 अक्टूबर 1927 और अन्ततः 19 दिसम्बर 1927 को प्रातः 6:30 बजे गोरखपुर जेल में ' बिस्मिल' को फांसी परा चढ़ा दिया गया। (29) फांसी के समय उनके अंतिम शब्द थे 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं और विश्वानि

देसवितुर्दरितानि.....मन्त्र को जाँप करते हुए फंदे पर झूल गये। [30]

पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' फांसी से पूर्व अपनी आम्मकथा में लिखते है कि मैं अपीलों द्वारा फाँसी की तारीख हटवाकर यह परीक्षा करना चाहता था कि युवकों में कितना दम है और देशवासी कितनी सहायता दे सकते हैं किन्तु मुझे बड़ी निराशा हुई अंत में मैंने जेल से भागने का निर्णय किया, ऐसा हो जाने से सरकार को अन्य तीनों की फाँसी की सजा माफ करनी पड़ेगी.....किन्तु बाहर से कोई सहायता न मिल सकी, यहीं तो हृदय पर आघात लगता है कि जिस देश में मैंने इतना बड़ा क्रांतिकारी आंदोलन तथा षड्यन्त्रकारी दल खड़ा किया था वहाँ मुझे प्राण रक्षा के लिए एक रिवाल्वर तक न मिल सका, एक नव युवक भी सहायता को न आ सका। [31] वस्तुतः पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' ब्रिटिश साम्राज्य के लिए रक्तबीज बन गये थे वे स्वयं लिखते है–

मरते रोशन, बिस्मिल, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से।

होंगे पैदा सैकडत्रों इनके रूधिर की धार से।।

इलाहाबाद से प्रकाशित ' चाँद' पत्रिका ने नवम्बर 1928 में 'फाँसी' विशेषांक निकालकर शहीदों को श्रद्वांजलि अर्पित की। काकोरी की घटना सरकार की दृष्टि में मात्र डकैती नही थी बल्कि एक सशस्त्र क्रांति थी जिसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार को हटाना था व भारत को स्वतंत्र कराना था।

'बिस्मिल' एक महान क्रांतिकारी के साथ–साथ एक जन्मजात कवि थे उनका लक्ष्य समाज में क्रांति के साथ ही जनता में राष्ट्रीय भावना जगाना तथा वैचारिक क्राति लाना था जिससे वह ब्रिटिश सरकार के विरूद्व एकजुट हो सके। इसी कारण उन्होंने ' मातृवेदी' एवं मैनपुरी प्रतिज्ञा स्वयं कविता में लिखी थी–

निज देश सेवा हेतु मेरा जन्म है संसार में,

तुच्छ जन्म तत्पर सदा होगा स्वजाति सुधार में।

प्रिय देश सेवा कार्य में ही प्राण मेरे जायेगें,

मरते समय तक देश का उपकार कुछ कर जायेंगे।।[32]

'बिस्मिल' ने राष्ट्रीय भावना से प्ररित, वैचारिक क्रान्ति हेतू कई पुस्तके लिखी जिन्हें स्वयं छपवाया और बिक्री किया। वह प्रो0 राम के छद्मनाम से भी लिखते थे। उनकी पुस्तक 'बोल्शेविकों की करतूत' हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यालय , कलकत्ता से 1922 में प्रकाशित हुई। उनके लेख 'प्रभा' (कानपुर) महारथी, वैदिक सन्देश, चांद, कीर्ति तथा स्वदेश (गोरखपुर) में उनके जीवित रहते हुए तो छापे ही, फांसी के बाद भी छपते रहे। [33] 'बिस्मिल' की शायरी एवं गद्य लेखन में राष्ट्रीय व भारतीय चिन्तन भरा हुआ है–

देशहित पैदा हुए, देशहित मर जायेंगे।

मरते–मरते देश को जिंदा मगर कर जायेंगे।।

फाँसी की सजा निश्चित हो जाने पर बिस्मिल ने 16 दिसम्बर 1927 को अपनी आत्मकथा पूरी कर उसे अपने साथी के हाथ चोरी–छिपे बाहर भिजवाया। 'बिस्मिल' की आत्मकथा सर्वप्रथम 'प्रताप' प्रेस कानपुर में प्रकाशित हुई जिसे छपते ही ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया, ब्रिटिश शासनकाल में उनकी आम्तकथा दोबारा प्रकाशित हुई किन्तु दोबारा जब्त कर लिया गया ।[34] बिस्मिल की आत्मकथा चार भागों–आत्म चरित, स्वदेश प्रेम, स्वतंत्र जीवन और परिणाम में विभिक्त है। आजाद भारत में यह आत्मकथा पं0 बनारसी प्रसाद चतुर्वेदी के सम्पादन में आत्माराम एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित हुई।

'बिस्मिल' मैनपुरी षड्यन्त्र केस के समय भूमिगत जीवन व्यतीत करते हुए 'मैनपुरी षड्यंत्र' नामक पहली पुस्तक कोसमा (मैनपुरी) में लिखी

और पिनाहट (आगरा) में आर्य भास्कर प्रेस, आगरा से प्रकाशित कराया। [35] श्री श्याम सिंह, 'बागी' के अनुसार' धन संग्रह हेतु 'बिस्मिल' ने कुछ पुस्तकें लिखकर प्रकाशित करने की योजना बनायी इनमें 'मन की लहर' (काव्य संग्रह) बोल्शेविकों की करतूत तथा अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली? पुस्तकें शामिल थी। [36] अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली? इस पुस्तक को देव नारायण भारतीय तथा राजाराम बाजपेयी ने कांग्रेस अधिवेशन (दिल्ली) में बांटा था [37] इन दिनों क्रतिकारी नवयुवकों का ध्यान आकर्षित करने तथा उन्हें दल में जोड़ने के लिए इस प्रकार की नीति अपनाते थे।

'बोल्शेविकों की करतूत' का प्रकाशन बिस्मिल की अपनी संस्था 'सुशीलमाला' के अंतर्गत आगरा (पिनाहट) से किया गया। यह एक रोचक उपन्यास है इसमें वोल्शेविकों के बारे में जो विचार व्यक्त किये है उनका समर्थन नेताजी सुभाष चन्द्रबोस ने भी किया है। [38] 'बिस्मिल' ने स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं को भागीदारी के लिए प्रेरित करने हेतु रूस की स्वाधीनता में कैथेराइन की भूमिका के विषय पर 'कैथेराइन' (स्वाधीनता की देवी) पुस्तक की रचना की जिससे प्रभावित होकर आजाद हिन्द फौज में 'झांसी की रानी रेजीमेण्ट' का गठन किया गया और उसकी कमान कैम्टन लक्ष्मी को सौंपी गयी। [39] इसके अतिरिक्त राष्ट्रीयता एवं स्वदेश भावना से ओत–प्रोत, त्याग बलिदान के लिए प्रेरित करने वाली कुछ अन्य पुस्तकों– 'स्वदेशी रंग, क्रांतिकारी जीवन, यौगिक साधना, चीनी षड्यंत्र, क्रांतिकारी गीतांजलि, तपोनिष्ट, –अरविन्द की कैद–कहानी, अशफाक की याद में , 'बिस्मिल की शायरी' के अतिरिक्त कुछ लेख–तख्ता पलट गुप्त षड्यंत्र (कीर्ति मासिक , दिसम्बर 1927) पुलिस की कमीनी चाले (कीर्तिमासिक अमृतसर जून 1927) महाभारत पर संक्षित टीका (गीताप्रेस गोरखपुर 1925) पं0 गेंदालाल दीक्षित– मैरपुरी षड्यंत्र के नेता (प्रभा, कानपुर 1924) आदि महत्वपूर्ण लेख छपते रहे।

इस प्रकार पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' एक महान क्रांतिकारी, नेता, राष्ट्र को जाग्रत करने वाले कवि, प्रेरणा के प्रतीक शायर, देश में चेतना का मंत्र फूंकने वाले, विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए लालायित एक महान देशभक्त ,राष्ट्रप्रेमी थे। ऐसे वीर स्वतंत्रता प्रेमी क्रांतिकारियों की शहादतें और कुर्बानियां स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर हो गयी। उनकी यह तमन्ना थी–

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजु–ए कातिल में है।।

वे अपने देश की आजादी का स्वप्न देखते थे–

शहीदों के खूं का असर देख लेना, मिटा देंगे जालिम का घर देख लेना।

ऐ 'बिस्मिल' हुआ हिन्द आजाद अपना, छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना।।

और उनका यह स्वप्न उनकी मृत्यु के 20 वर्ष बाद ही पूरा हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मदन लाल वर्मा 'क्रान्त' – स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास, पृ0 516
2. वही
3. पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' आत्मकथा, पृ0 24–25
4. मदन लाल वर्मा ,क्रान्त– वही, पृ0 517
5. जगदीश चन्द्र दीक्षित –यू0पी0 लेजेसलेटिव कौंसिल, पृ0 126
6. मदन लाल वर्मा 'क्रान्त'– वही, पृ0 517

7. विस्तृत जानकारी के लिए देखें– मैनपुरी षड्यन्त्र केस
8. आशा रानी व्होरा–क्रांतिकारी किशोर, पृ0 81–82
9. मदन लाल वर्मा 'क्रांत'– वही, पृ0 518
10. वही
11. आशारानी व्होरा– स्वाधीनता सेनानी लेखक एवं पत्रकार, पृ0 182
12. आशारानी व्होरा–क्रातिकारी किशोर, पृ0 79
13. शचीन्द्रनाथ सान्याल–बंदी जीवन, पृ0 227
14. योगेशचंद्र चटर्जी–इन सर्च ऑफ फ्रीडम, पृ0 218
15. आशारानी व्होरा–क्रांतिकारी किशोर, पृ082
16. योगेश चन्द्र चटर्जी–वही , पृ0 357–361
17. पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' – आत्मकथा, पृ0 83–84
18. सुधीर विद्यार्थी–शहीद रोशन सिंह, पृ0 23
19. रिपोर्ट–टेरिज्म इन इंडियां, पृ0 79
20. पं0. राम प्रसाद 'बिस्मिल'' आत्मकथा, पृ0
21. सुधीर विद्यार्थी–शहीद अशफाक उल्ला खां और उनका युग, पृ0 37
22. मम्मथनाथ गुप्त – भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास , पृ0 216
23. पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' –आत्मकथा, पृ0 90
24. वही
25. बनारसी प्रसाद चतुर्वेदी–अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ, पृ0 27–28
26. वही, पृ0 30
27. वेशम्पायन– अमर शहीद चन्द्रशेख आजाद , खंड– 1 , पृ0 90
28. मदल लाल वर्मा 'क्रांत' –वही , पृ0 522
29. वही
30. मम्मथनाथ गुप्त– भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास, पृ0 250–51
31. 'बिस्मिल'– आत्मकथा, पृ0 141
32. आाशारानी व्होरा– स्वाधीनता सेनानी लेखक एवं पत्रकार, पृ0 184
33. वहीं, पृ0 185
34. वही, पृ0 183
35. 'बिस्मिल' आत्मकथा (आत्माराम एण्ड सन्स) पृ0 163
36. श्याम सिंह 'बागी' काकोरी काण्ड के अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' , पृ0 19
37. डा0 एन0सी0 मेहरोत्रा–स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपर का योगदान, पृ0 89
38. शिशिर कुमार बोस– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, पृ0 65
39. मदन लाल वर्मा 'क्रान्त'– वही, पृ0 526